2. वर्ण विचार

व्याकरण शास्त्र के तीन मुख्य अंगों में से पहला अंग है– वर्ण विचार। इसके अंतर्गत वर्णों के उच्चारण और लेखन के तरीकों पर विचार किया जाता है। वर्ण भाषा की सबसे छोटी ध्वनि होती है जिसके और टुकड़े नहीं हो सकते।

शिक्षण-संकेत

- ❖ शिक्षक/शिक्षिका छात्रों को हिंदी वर्णमाला की पुनरावृत्ति करने को कहें। उनसे वर्णमाला सुनें।
- ❖ पूछें, स्वर कितने होते हैं। व्यंजनों की संख्या कितनी होती है। संयुक्त व्यंजन कौन-से हैं आदि।
- ❖ समझाएँ, मुँह से निकलने वाली छोटी से छोटी ध्वनि ही वर्ण होती है।
- ❖ स्वर के स्वतंत्र रूप और मात्रा रूप के बारे में छात्र-छात्राओं से पूछें।
- ❖ वर्ण-विच्छेद करना छात्र पिछली कक्षाओं में सीख चुके हैं। ब्लैकबोर्ड पर कुछ शब्द लिखकर छात्रों से उनका वर्ण-विच्छेद करवाएँ। सुनिश्चित कर लें कि छात्र-छात्राएँ विषय में रुचि ले रहे हैं।
- ❖ बीच-बीच में पूछें व्यंजन को स्वर रहित कैसे लिखा जाता है।
- ❖ छात्रों को **अं** और पंचम वर्ण के अनुस्वार ‍ं का अंतर समझाएँ। छात्र अकसर पंचम वर्ण के ‍ं के स्थान पर **अं** का प्रयोग करते हैं। उन्हें समझाएँ, जब ङ, ञ, ण, न, म पंचम वर्णों के वर्ग का कोई वर्ण शब्द में प्रयोग होता है तो इन पंचम वर्णों को ही बिंदु रूप में लगाया जाता है। इनसे अलग वर्णों में अं का प्रयोग होता है। चंद्रबिंदु और विसर्ग के प्रयोग के बारे में बताएँ। समझाएँ, मात्रा के साथ चंद्रबिंदु का प्रयोग बिंदु के रूप में किया जाता है जैसे– में, ओंठ, बैंगन आदि।
- ❖ छात्रों से 'र' के रूपों बारे में पूछें। छात्र इससे परिचित हैं।
- ❖ संयुक्त व्यंजन, संयुक्ताक्षर तथा द्‌वित्व व्यंजनों के अंतर को छात्रों से जाने फिर उन्हें बताएँ।
- ❖ आगत स्वर ऑ और नुक्ता के प्रयोग पर ध्यान दिलाएँ।
- ❖ छात्रों को कुछ शब्द लिखने को कहें और उनकी अशुद्‌धियों को दूर करवाएँ।
- ❖ सभी छात्रों पर ध्यान दें।